IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री

पंचानन महतो, शोधार्थी, हिंदी विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, झारखण्ड

कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण लेखिका है जिन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में स्त्री पात्रों को प्रमुखता दी है। उनके उपन्यासों में स्त्री जीवन की जटिलताओं, उनकी संघर्षशीलता उनकी संवेदनशीलता और उनकी स्वतंत्रता की सोच को बखूबी दर्शाया गया है। सोबती की रचनाएँ समाज के विभिन्न आयामों को उजागर करती हैं और महिलाओं की मानसिकता, उनकी चुनौतियों और उनकी आकांक्षाओं को प्रकट करती हैं।

'जिंदगीनामा' कृष्णा सोबती का प्रमुख उपन्यास है जो पंजाब की ग्रामीण पृष्ठभूमि में बसा हुआ है। यह उपन्यास विभिन्न पात्रों के माध्यम से उस समय के समाज, संस्कृति और जीवन शैली को प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में कई स्त्री पात्र है जिनमें शाहनी बिंद्रादई चन्नी, रेशमा जैसी महिलाएं शामिल हैं जो अपने सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों से जूझती हैं। बिल्लो का चरित्र बहुत मजबूत और आत्मनिर्भर है। वह समाज की पारंपरिक भूमिका को चुनौति देती है और अपने शर्तों पर जीवन जीने का प्रयास करती है। वे अपनी–अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई दिखती हैं। जोहरा का संघर्ष उसके निजी और सामाजिक जीवन में संतुलन बनाने का है जबकि गजां का संघर्ष उसकी पहचान और आत्मसम्मान की खोज का है।

'जिंदगीनामा' की माँ, बीबी एक परित्यकता स्त्री है। जो हमेशा खुद की किस्मत पर रोती रहती है, ''माँ, बीबी बैठी–बैठी सोचती रही। जिन्द अभागी रात बराबर। आँखों के आगे कंजरी के रूप शौदाई हुआ घरवाला आ विठका तो रुलाई ने आ घेरा।''[1] इस तरह माँ, बीबी अपनी किस्मत और घर वालों का नाम ले लेकर पूरा जीवन उस पर ही रोने में गुजारती है। मगर उसी समय चाची महरी भी उसे धीरज देते हुए कहती है, ''न धिये, ऐसे बगलोल मरद का न रो''[2] इस उपन्यास– में स्त्री पात्रों के माध्यम से सोवती ने उस समय के समाज में महिलाओं की स्थिति, उनले संघर्ष और उनकी महत्वाकांक्षाओं को उजागर किया है। प्रमुख स्त्री पात्र अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहती हैं और समाज के पारंपरिक ढाँचों को चुनौती देती हैं।

'मित्रो मरजानी' सोबती का एक और महत्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें मुख्य पात्र मित्रो है। मित्रो का चरित्र अत्यंत बोल्ड और विद्रोही है। वह अपनी यौन इच्छाओं और स्वतंत्रता की खुलकर अभिव्यक्ति करती है जो उस समय के समाज के लिए एक बड़ा धक्का था। मित्रो का चरित्र सोबती की लेखन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है जो अपनी यौनिकता के बारे में बिना किसी झिझक के बात करती है। उसका विद्रोह समाज की परंपरागत सोच के खिलाफ है। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है और अपनी इच्छाओं को दबाने के बजाय खुलकर व्यक्त करती है। मित्रो में अमिट काम भावना है। वह युगों से आयी नैतिक मान्यताओं को तोड़ चुकी है। उस नैतिक मान्यताओं को तार–तार कर चुकी है। इस काम भावना के जरिए दुनिया का सारा सुख समेटना चाहती है। देह के परे का संसार उसके लिए व्यर्थ है। वह

कहती है, ''मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मछली सी तडपती हूं।''[3] उसकी यह अतृप्त व्यास न बुझने के कारण वह समस्या से घिरी है। इस कारण वह अपनी ननद जनको से संकेत में काम संबंधों की बात करती है। जिठानी सुहाग के सामने अमर्यादित व्यवहार करना, जेठ, बनवारी को घूंघट की ओट से रूप सौंदर्य की झलक दिखा छेड़ना, सबके सामने सरदारी के साथ सटकर बैठना, यह सब अतृप्ति से उपजी काम वासना का ही प्रतीक है।

इस उपन्यास में सोबती ने महिलाओं की यौनिकता, उनके अधिकारों और स्वतंत्रता की खोज को प्रमुखता दी है। मित्रो का चरित्र समात्र के लिए एक चुनौती है और वह पारंपरिक सोच को बदलने की कोशिश करती है। सोबती ने इस उपन्यास के माध्यम से यह दिखाया है कि स्त्रियाँ भी अपनी इच्छाओं और स्वतंत्रता के प्रति सजग होती हैं और उन्हें अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ने का पूरा हक है।

'दिलो–दानिश' विभाजन के समय की पृष्ठभूमि में लिखा गया उपन्यास है जिसमें कुटुंब प्यारी, महक बानो और छुन्ना नामक तीन प्रमुख स्त्री पात्र है। यह उपन्यास उनके जीवन की कहानी को बुनते हुए उनके संघर्ष, प्रेम और संवेदनाओं को प्रस्तुत करता है। इनका चरित्र एक सशक्त महिला का है जो परिवार और समाज के बंधनों के बीच अपने अस्तित्व की खोज में है। वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है और समाज के इनक पारंपरिक ढांचों को चुनौति देती है। इनका चरित्र स्वतंत्र और आत्मनिर्भर है। वह अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेती हैं और समाज की परवाह किए बिना अपने रास्ते पर चलती हैं।

'दिलो–दानिश' की छुन्ना अपने जीवन से परेशान है और उससे मुक्ति की तलाश में है। महक बानो भी अलग–अलग समस्याओं से घिरी है। वह कहती है, ''आज से पहले हम औरत भी नहीं थे, अँगिया थे, सलवार थे।''[4] ... जूती अपनी थी और पॉप किसी को सौंप रखे थे। इस उपन्यास में भी स्त्री की घुटन और आत्मपीड़ा अभिव्यक्त हुई है। कुटुंब प्यारी पति की रखैल के कारण सूसी नहीं और उसके कारण कुटुंब का हमेशा अपमान होता रहता है। जैसे ''खामोश ! उगालदान में थूकने की तरह कुछ– ना – कुछ बोलती ही न जाइए। आप अच्छी तरह जानती है कि महक हमारे नजदीक है। उसके पास हमारे बच्चे हैं। कुछ दानाई से काम लीजिए।''[5] यहाँ लेखिका ने पुरुष का स्त्री के प्रति अनुदार दृष्टिकोण व्यकत किया है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि स्त्रियाँ समाज के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व और पहचान की खोज में निरंतर प्रयासरत रहती हैं।

'सूरजमुखी अँधेरे के' की रत्ती मुक्ति की तलाश में है। वह सूब्रामनियम से कहती है, ''जिसने गरीबी को ओढ लेने के लिए कीमती कपड़े पहने हों, जिसके संबंध में कोई रियासत न हो, दिखाने के नाम पर एक तेवर तक नहीं।''[6] इस उपन्यास में रत्ती आधुनिक जीवन की आशा से त्रस्त है और उसके जीवन में अनेक पुरुष अलग–अलग समस्या लेकर आते हैं। 'डार से विछुड़ी' उपन्यास में पाशो घर परिवार में परतंत्र है। उसकी शादी एक बूढ़े से की जाती है। बूढ़े पति की मृत्यु के बाद तो वह पूरी तरह से अधिकार से वंचिता हो गई है। पाशो का चचेरा देवर बरकत उसकी जिंदगी में धूमकेतु–सा प्रविष्ट होकर उसे बर्बाद कर डालता है। बरकत उसे बढ़े के हाथों बेच देता है। बरकत की दृष्टि से स्त्री केवल उपभोग की वस्तु है और उसे एक बार नहीं सौ बार बेचना चाहिए। बूढ़े लाला के शब्दों में, ''बरकत बसाई एक बार नहीं, सौ बार तुम्हें बेच खाता है स्पष्ट है कि कृष्णा सोबती का लेखन स्त्री चेतना की विलक्षण धरोहर है जिसमें विभिन्न पात्रों की मनः स्थिति को बहुत ही अद्‌भुत तरीके से उकेरा गया है।

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का गहन विश्लेषण यह दर्शाता है कि उनके साहित्य में महिलाएं केवल पारंपरिक भूमिकाओं में नहीं बल्कि सशक्त, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर रूप में प्रस्तुत की गई हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र समाज के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व और पहचान की खोज में निरंतर संघर्षरत रहती हैं। सोबती ने

अपने लेखन के माध्यम से स्त्रियों की मानसिकता, उनकी चुनौतियों और उनकी आकांक्षाओं को बखूबी उजागर किया है। उनके साहित्य में स्त्री पात्र न केवल अपने जीवन की जटिलताओं और संघर्षों से जूझती हैं बल्कि वे अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए भी दृढ़ता से खड़ी होती हैं। अंततः रामचंद्र तिवारी के इस कथन से पूर्णतः सहमत हुआ जा सकता है जिसमें में कृष्णा सोबती के संबंध में कहते हैं, ''अपनी प्रत्येक रचना में एक नई भूमि लेकर उपस्थित होने वाली कृष्णा सोनती निश्चित ही हिंदी कथा संसार की अन्यतम विभूति हैं।''[8]

संदर्भ सूची :

1. सोबती, कृष्णा, जिंदगीनामा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, (सं) –1979, पृ. 46
2. वही, पृ. 150
3. सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली (सं) – 1967, पृ. 20
4. सोबती, कृष्णा, दिलो– दानिश, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, (सं) – 1979, पृ. 175
5. वही, पृ. 36
6. सोबती, कृष्णा, सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, (सं) – 1972, पृ. 84
7. सोबती, कृष्णा, डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, (सं) – 1958, पृ. 86
8. तिवारी, डॉ० रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य–साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, (सं) – 2015, पृ. 261